भारतीय अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र

कमल कुमार[1] और ललिता गर्ग[2]

[1] विस्तार शिक्षा विभाग, भाकृअनुप–आईवीआरआई, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश 243122.

[2]पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी प्रभाग, भाकृअनुप–आईवीआरआई, इज्जतनगर, बरेली, उत्तर प्रदेश 243122.

ईमेलः kamalvet1995@gmail-com

भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुधन क्षेत्र का योगदान

पशुधन कृषि का एक अभिन्न अंग है, और यह लोगों की पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह क्षेत्र ग्रामीण आबादी के दो–तिहाई से अधिक को आजीविका प्रदान करता है। भारत में सबसे बड़ा पशुपालन क्षेत्र है और यह दुनिया के कुल दूध उत्पादन में 18.6 प्रतिशत का योगदान देता है। पशुधन के प्रत्येक उप–क्षेत्र की वार्षिक वृद्धि दर 5 प्रतिशत से अधिक है, जो इस क्षेत्र में इंद्रधनुष क्रांति की विशाल क्षमता को मान्य करता है। इसलिए, यह सही मायने में कहा जा सकता है कि पशुधन कृषि क्षेत्र का नया विकास डायनेमो है।

पशुधन क्षेत्र में फसलों की तुलना में अधिक संभावनाएं हैं। 2002–03 में कृषि आय में पशुधन का हिस्सा 4 प्रतिशत था, जो 2012–13 में 9 प्रतिशत बढ़ा और 13 प्रतिशत तक पहुंच गया जब इस अवधि में खेती का हिस्सा सिर्फ 1 प्रतिशत बढ़ा।

पशुधन क्षेत्र का समान वितरण है, यहां कृषि के विपरीत सरकार की प्रत्येक योजना या नीति सीधे व्यक्तिगत परिवार को प्रभावित करती है। इसके अतिरिक्त, कृषि के विपरीत, पशुधन क्षेत्र में योजनाओं के कुलीन कब्जे की संभावना दुर्लभ है।

किसानों की अर्थव्यवस्था में पशुधन की भूमिका किसानों की अर्थव्यवस्था में पशुधन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत में किसान मिश्रित कृषि प्रणाली यानी फसल और पशुधन का संयोजन बनाए रखते हैं जहां एक उद्यम का उत्पादन दूसरे उद्यम का इनपुट बन जाता है जिससे संसाधन दक्षता का एहसास होता है। पशु विभिन्न तरीकों से किसानों की सेवा करते हैं।

1. **आयः** भारत में कई परिवारों के लिए पशुधन सहायक आय का एक स्रोत है, विशेष रूप से संसाधन गरीब जो जानवरों के कुछ सिर रखते हैं। गाय–भैंस यदि दूध में हैं तो पशुपालकों को दूध की बिक्री के माध्यम से नियमित आय प्रदान करेंगे। भेड़ और बकरी जैसे पशु विवाह, बीमार व्यक्तियों

के उपचार, बच्चों की शिक्षा, घरों की मरम्मत आदि जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए आपात स्थिति के दौरान आय के स्रोत के रूप में काम करते हैं। जानवर भी चलती बैंकों और संपत्ति के रूप में काम करते हैं जो मालिकों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हैं।

2. **रोजगारः** भारत में कम साक्षर और अकुशल होने के कारण बड़ी संख्या में लोग अपनी आ. जीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। लेकिन कृषि प्रकृति में मौसमी होने के कारण एक वर्ष में अधिकतम 180 दिनों के लिए रोजगार प्रदान कर सकती है। भूमिहीन और कम भूमि वाले लोग दुबले कृषि मौसम के दौरान अपने श्रम का उपयोग करने के लिए पशुधन पर निर्भर हैं।

3. **भोजनः** पशु उत्पादों जैसे दूध, मांस और अंडे, पशुपालकों के सदस्यों के लिए पशु प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धता लगभग 375 ग्राम ६ दिन हैय 2017–18 के दौरान अंडे 74 ६ वर्ष है।

4. **सामाजिक सुरक्षाः** पशु मालिकों को समाज में उनकी स्थिति के संदर्भ में सामाजिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। जिन परिवारों के पास विशेष रूप से भूमिहीन हैं, जिनके पास जानवर हैं, उनकी स्थिति उन लोगों की तुलना में बेहतर है जिनके पास नहीं है। देश के विभिन्न हिस्सों में शादियों के दौरान जानवरों को उपहार में देना एक बहुत ही सामान्य घटना है। पशुपालन भारतीय संस्कृति का अंग है। जानवरों का उपयोग विभिन्न सामाजिक धार्मिक कार्यों के लिए किया जाता है। हाउस वार्मिंग समारोह के लिए गायोंय त्योहारों के मौसम में बलि के लिए मेढ़े, हिरन और मुर्गेय विभिन्न ६ ार्मिक कार्यों के दौरान बैल और गाय की पूजा की जाती है। कई मालिक अपने जानवरों के प्रति लगाव विकसित करते हैं।

5. **मसौदाः** बैल भारतीय कृषि की रीढ़ की हड्डी हैं। किसान विशेष रूप से सीमांत और छोटे, जुताई, ढुलाई और इनपुट और आउटपुट दोनों के परिवहन के लिए बैलों पर निर्भर हैं।

6. **गोबरः** ग्रामीण क्षेत्रों में गोबर का उपयोग कई उद्देश्यों के लिए किया जाता है जिसमें ईंधन (गोबर के उपले), उर्वरक (खेत की खाद) और पलस्तर सामग्री (गरीब आदमी का सीमेंट) शामिल हैं।

निष्कर्ष

हाल के दिनों में पशुधन क्षेत्र में 6 प्रतिशत से अधिक की निरंतर दर के साथ वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है। इस प्रकार यह सही मायने में कहा जा सकता है कि पशुधन कृषि और संबद्ध क्षेत्र का नया विकास इंजन है।